पैगंबर मूसा के जीवन की झलकियां

रेटिंग:

विवरण: ?????? ???? ?? ???? ?? ?????? ???????? ??? ?????? ??? ?? ?? ?? ??? ?? ?? ???? ?? ???? ???? ?? ???? ?? ???? ?? ??? ?? ????

श्रेणी: पाठ › इस्लामी मान्यताएं › अन्य पैगंबरो का जीवन

द्वारा: Aisha Stacey (© 2012 NewMuslims.com)

प्रकाशित हुआ: 08 Nov 2022

अंतिम बार संशोधित: 07 Nov 2022

उद्देश्य:

- पैगंबर मूसा के जीवन की कई घटनाओं को जानना और उन पर चर्चा करना कि 21वी शताब्दी के मुसलमान होने के नाते हम इन घटनाओं से क्या सीख सकते हैं और अपने जीवन मे लागू कर सकते हैं।

अरबी शब्द:

- *????* - पैगंबर मोसेस का अरबी शब्द।
- *????* - आस्तिक और अल्लाह के बीच सीधे संबंध को दर्शाने के लिए अरबी का एक शब्द। अधिक विशेष रूप से, इस्लाम में यह औपचारिक पाँच दैनिक प्रार्थनाओं को संदर्भित करता है और पूजा का सबसे महत्वपूर्ण रूप है।

एक अंधेरी रात में तूर पर्वत की छाया में, अल्लाह ने मूसा को पैगंबर की उपाधि प्रदान की और उनसे एक छोटी लेकिन उल्लेखनीय बातचीत की। यह एक ऐसी बातचीत थी जिसने मूसा को अपने बारे में, दुनिया के बारे में, मानव जाति की प्रकृति के बारे में और अल्लाह की प्रकृति के बारे में सबक सिखाया। यह आज भी मानव जाति को महत्वपूर्ण सबक सिखाती है। दैनिक आधार पर, क़ुरआन के शब्द जीवन बदल देते हैं। मूसा की कहानी से सीखे गए सबक आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने हजारों साल पहले थे।

मूसा की कहानी हमें अल्लाह पर भरोसा करने का महत्व सिखाती है; यह दर्शाता है कि अल्लाह की योजनाएं किसी भी जीत, परीक्षा, या परीक्षण को समाप्त कर देंगी, और यह हमें दिखाती है कि इस दुनिया की पीड़ाओं से कोई राहत नहीं है, सिवाय अल्लाह की याद के और उसके नजदीक जाने से। मूसा के जीवन को पढ़ने और समझने से पता चलता है कि अल्लाह कमजोरी को ताकत से और असफलता को सफलता से बदल सकता है; और यह कि अल्लाह नेक लोगों को उन स्रोतों से देता है जिनकी हम कल्पना भी नही कर सकते हैं।

मूसा के जीवन काल में मिस्र विश्व की महाशक्ति था। धन और शक्ति बहुत कम लोगों के हाथों में थी, और बहुसंख्यकों का जीवन और उनकी जीवन शैली का बहुत कम परिणाम था। राजनीतिक स्थिति कुछ मायनों में 21वीं सदी की राजनीतिक दुनिया के समान थी। ऐसे समय में जब दुनिया के युवाओं को सबसे शक्तिशाली राजनीतिक और सैन्य खेलों के लिए तोप के चारे के रूप में इस्तेमाल किया जाता था, मूसा की कहानी विशेष रूप से प्रासंगिक है। यह हमें सिखाता है कि कैसे अल्लाह के आदेशों का पालन करना है और यह हमें ऐसी दुनिया में जीवित रहना सिखाता है जहां धर्म को शक्ति और अधिग्रहण से कम महत्व दिया जाता है।

पैगंबर मूसा के जीवन के बारे में अधिक विस्तृत जानकारी पढ़ने के लिए यहां जाएं: http://www.islamreligion.com/articles/3366/viewall/

सबक 1

नमाज स्थापित करना।

मूसा के पास असाधारण चरित्र की शक्ति थी, यहां तक कि एक काम उम्र युवा होने के बाद भी उन्होंने सबसे कठिन परिस्थितियों में भी दृढ़ रहने की क्षमता विकसित की थी। उन्होंने मौत के डर से मिस्र छोड़ दिया था, और उन्हें एक नई जगह नया जीवन मिल गया था, लेकिन बाद मे परिस्थितियों की वजह से वो अपनी जन्म भूमि पिर चले गए। रात के अंधेरे में, पहाड़ की छाया में, आग की रोशनी ने मूसा को एक अद्भुत संवाद में खींचा। उनके सदमे और आश्चर्य की कल्पना कीजिए जब उन्होंने खुद अल्लाह के साथ बातचीत की। मूसा को अपने जूते उतारने का आदेश देने के बाद, अल्लाह ने उन्हें अपने प्रति मानवजाति के दायित्व की याद दिलाई।

"निःसंदेह मैं ही अल्लाह हूं, मेरे सिवा कोई पूज्य नहीं, तो मेरी ही पूजा (वंदना) कर तथा मेरे स्मरण (याद) के लिए नमाज़ की स्थापना कर। (क़ुरआन 20:14)

इस बातचीत में मूसा और उसके अनुयायियों के लिए नमाज निर्धारित की गई थी। पैगंबर मुहम्मद और उनके अनुयायियों के लिए भी ठीक उसी तरह नमाज निर्धारित की गई थी। मूसा के मिशन को मिस्र के फिरौन के दरबार में प्रकट करने से पहले अल्लाह ने अपने और मूसा के बीच एक सीधा संबंध स्थापित किया। मूसा को उसके सबसे बड़े डर का सामना करने की आज्ञा देने से पहले अल्लाह ने कहा, मेरी पूजा करो और मुझे याद करो, क्योंकि मैं कमजोरी को ताकत और असफलता को जीत से बदलने में सक्षम हूं; मैं अकल्पनीय स्रोतों से आपका समर्थन करूंगा। नमाज से अल्लाह और नमाज़ पढ़ने वाले के बीच संबंध बनता है और इसका मतलब है कि कोई भी अल्लाह की सुरक्षा से दूर नहीं है। आज के समय मे जब भविष्य के बारे में हमारे डर हम पर हावी हो जाते हैं, एक अटूट बंधन आराम और खुशी की चीज है।

सबक 2

अल्लाह हमारी प्रार्थना और दुआ सुनता है।

मूसा सम्मानित व्यक्ति थे। मिस्र के रेगिस्तान में चलने से थकने और पानी की कमी होने के बावजूद भी वह दूसरों की जरूरतों को अपने से पहले रखने थे। रेगिस्तानी नखलिस्तान मे एक पेड़ की छाया में आराम करने के बजाय उन्होंने दो युवतियों की मदद की जो भेड़ों के झुंड को पानी पिलाने की कोशिश कर रही थीं। हालांकि, ये करने के बाद वह बैठ गए और अल्लाह से मदद की गुहार लगाई। उन्होंने कहा, "ऐ ईश्वर, आप मुझे जो कुछ भी अच्छा दे सकते हैं, मुझे निश्चित रूप से इसकी आवश्यकता है"। उसकी दुआ खत्म होने से पहले ही अल्लाह की तरफ से मदद मिली। मूसा शायद रोटी के टुकड़े या मुट्ठी भर खजूर की उम्मीद कर रहा था, लेकिन अल्लाह ने उसे सुरक्षा, प्रावधान और एक परिवार दिया। व्यक्ति को कभी भी निराश नहीं होना चाहिए कि अल्लाह उसकी प्रार्थना और दुआ सुन रहा है। हम कभी अकेले नहीं होते, जैसे मूसा अकेले नही थे जब वह सब कुछ छोड़कर अपनी भूमि से चले आये थे।

सबक 3

यदि कोई व्यक्ति स्वीकार कर लेता है कि अल्लाह के सिवा कोई सच्चा ईश्वर नहीं है तो कोई भी पाप अक्षम्य नहीं है।

मूसा की कहानी का एक हिस्सा जिसने सदियों से लोगों को आकर्षित किया है, वह है लाल सागर का अलग होना और मिस्र वासियों का डूबना। जब फिरौन के पास शक्ति, धन, अच्छा स्वास्थ्य और ताकत थी तो उसने अल्लाह को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। उसने संकेतों का खंडन किया और पैगंबर मूसा का उपहास और अपमान किया और धमकी दी। फिरौन के अहंकार, सबसे घृणित अपराध और

घृणति ज्यादती के बावजूद अल्लाह उसे माफ करने के लिए तैयार था, लेकिन फिरौन अहंकार की खुशी मे तब तक डूबा रहा जब बहुत देर हो चुकी थी। आखिरी समय में, जब लहरें उस पर टूट पड़ीं और उसका दिल डर से सिकुड़ गया, तो फिरौन ने अल्लाह को स्वीकार कर लिया। उसका अहंकार दूर हो गया, लेकिन अफसोस तब तक बहुत देर हो चुकी थी; फिरौन ने मृत्यु को निकट आते देखा और भय और घबराहट से अल्लाह को याद किया। इससे हमें यह सबक मिलता है कि देर होने से पहले पश्चाताप कर लेना चाहिए और क्षमा मांग लेनी चाहिए।

इस लेख का वेब पता

https://www.newmuslims.com/hi/articles/169

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।